स्पांकन

तृतीय अंक
2016-17

संरक्षक
श्री प्रद्युम्न व्यास — निदेशक, राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान, अहमदाबाद

मुख्य सलाहकार
विजय सिंह कटियार — गतिविधि अध्यक्ष, आरऐंडपी,
राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान, अहमदाबाद

संपादक
डॉ. दिनेश कुमार प्रसाद — हिन्दी अधिकारी, राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान, अहमदाबाद

परामर्शदाता
सिद्धार्थ स्वामीनारायण — अध्यक्ष एवं प्रमुख, सामान्य प्रशासन
मयंक लूंकर — संकाय सदस्य, एग्ज़ीबिशन डिज़ाइन

डिज़ाइन एवं लेआउट परामर्श
तरूण दीप गिरधर — वरिष्ठ संकाय, ग्राफिक डिज़ाइन

डिज़ाइन एवं लेआउट
मोनिका नागर — पीजी छात्रा, ग्राफिक डिज़ाइन
अंकिता ठाकुर — पीजी छात्रा, ग्राफिक डिज़ाइन

सहयोगी
हिना कंसारा — हिन्दी अधीक्षक

छवि संग्रह
वालजी सोलंकी — फोटोग्राफर

राष्ट्रीय डिज़ाइन संस्थान
डीआईपीपी के अधीन स्वायत्त संस्थान
वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार
पालडी, अहमदाबाद - 380007

दूरभाष 91-79- 26629500/26629600,
फैक्स 91-79- 26621167
वेबसाइट www.nid.edu

प्रिन्ट पर्यवेक्षण - तरूण दीप गिरधर, दिलिप ओझा
चयनित कागज- नैचुरल ऐवल्युशन
मुद्रक - स्मृति ऑफसेट प्रा.लि. अहमदाबाद

चयनित फोंट्स:
बलू, सारंग कुलकर्णी
कलम, लिपि रावल और जॉनी पिनहॉर्न
हलंत, सत्य राजपुरोहित और पिटर बिल'क
एक मुक्त, गिरीश दलवी और यशोदीप घोलाप

अनुक्रमणिका

भाषा स्तम्भ

भाषा स्तम्भ रूपांकन का दूसरा और महत्वपूर्ण चरण है। इसका उद्देश्य संस्थान के शैक्षणिक, गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों एवं छात्रों की रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करना और राजभाषा हिन्दी के प्रति जो हमारी नैतिक जिम्मेवारी है उसका निर्वहन करना है।

महात्मा गाँधी के भारतीय डाक-टिकट

– कुमारपाल परमार

“मोहन से महात्मा बने गांधीजी ने अपने प्रयोगों, अनुभवों, कार्यों आदि से भविष्य के लोगों को प्रेरणा प्रदान की हैं और अपने विचार समाज में प्रसारित किये हैं।”

वर्तमान समय में मानव, संघर्ष और हिंसा की काली छाया में डूबा हुआ है। आतंकवाद, सम्प्रदायवाद, रूढ़िवाद विनाश रूप ले रहे हैं तब राष्ट्र द्वारा गांधीजी के विचारों को किसी न किसी माध्यम से समाज में रखे जाते रहे हैं। मोहन से महात्मा बने गांधीजी ने अपने प्रयोगों, अनुभवों, कार्यों आदि से भविष्य के लोगों को प्रेरणा प्रदान की है और अपने विचार समाज में प्रसारित किये हैं। अहिंसा और सत्य से सब कुछ जीता जा सकता है, ऐसी प्रेरणा उन्होंने पूरे विश्व भर को दिया है। गांधीजी का परिचय देना आसान नहीं है, वे गुजरात के ही बापू नहीं, बल्कि सम्पूर्ण देश के महात्मा, दक्षिण आफ्रिका के गाँधीभाई, प्रख्यात सत्याग्रह सेनापति, स्वतंत्र भारत के राष्ट्रपिता, इतना नहीं संपूर्ण जगत के महापुरुष थे, और आगे भी रहेंगे। अंग्रेज शासन से भारत को मुक्त करवाना ही महात्मा का एकमात्र ध्येय नहीं था बल्कि देश की जनता को राष्ट्र के हित के लिए जागृत करना, देश के लोगों में राष्ट्रवाद का फैलाव करना भी उनका स्वप्न था।

सम्पूर्ण विश्व में भारत के आलावा तकरीबन 100 से भी अधिक राष्ट्रों ने गांधीजी पर 300 से ज्यादा डाक-टिकट जारी की है। ऐसा सन्मान दुनिया के किसी भी नेता को नहीं दिया गया। यह उनकी महानता को भली-भांति दर्शाता है। अमेरिका ने सन् 1961 में इसकी पहल की थी, बाद में कोंगो, पोलेण्ड, रोमानिया, म्यानमार आदि द्वारा डाक सामग्री प्रसारित की गयी है। भारत में, सिंध के कमिश्नर मी. बार्टल फ्रेरे द्वारा सिंध प्रांतो में सन् 1852 में डाक खर्च अदा किये गए की निशानी रूप डाक-टिकट जारी की गई थी। “सिंध डॉक्स” नाम की यह टिकट सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण एशिया में जारी किया गया था। डेप्युटी सर्वेयर जनरल, कैप्टन तुईये ने लिथोग्राफी पद्धति से डाक टिकट छपाई की शुरुआत की। बाद में, टाइपोग्राफी, लिथोग्राफी, एनग्रेविंग (इन्टाग्लीयो) और फोटोग्रव्योर पद्धति से डाक-टिकट की छपाई की शुरुआत हुई।

भारतीय डाक विभाग द्वारा भी डाक-टिकट के माध्यम से गांधीजी के कार्यो एवं मूल्यों को देश और दुनिया के समक्ष रखने में पीछे नहीं रहा। भारत देश में आजादी के बाद से लेकर अब तक भारतीय डाक विभाग द्वारा कई डाक टिकट पारित की गई है। जिसमें से यहाँ कुछ टिकट के माध्यम से गांधीजी के विचारों को प्रगट करने की कोशिश की गई है।
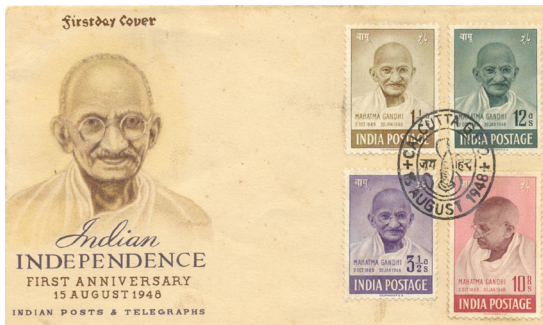
इस डाक-टिकट को “भारत की आजादी की पहली सालगिरह” नाम दिया गया था। दिनांक 15 अगस्त 1948 को भारत की आजादी की वर्षगांठ के पर्व पर प्रदर्शित की गयी। यह डाक-टिकट भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक द्वारा 8 रंगों के प्रयोग से फोटोग्रेव्योर पद्धति से ग्रेनाईट कागज पर छपाई गई थी एवं उसके साथ “प्रथम दिवस आवरण” और “केन्स्लेशन मोहर” तस्वीर अनुसार तैयार किये गए थे। यह डाक-टिकट उस समय की सबसे मूल्यवान डाक-टिकट थी। यह भारत की व्यापक सांस्कृतिक विरासत का चित्रण समान है। 10 रुपए मूल्य की डाक-टिकट विशेष रूप से सरकारी उपयोग के लिए केवल भारत के गवर्नल जनरल को प्रदान की गई थी। दिनांक 5 अक्टूबर 2007 को इस टिकट के सेट को 38,000 यूरो में नीलाम किया गया था।
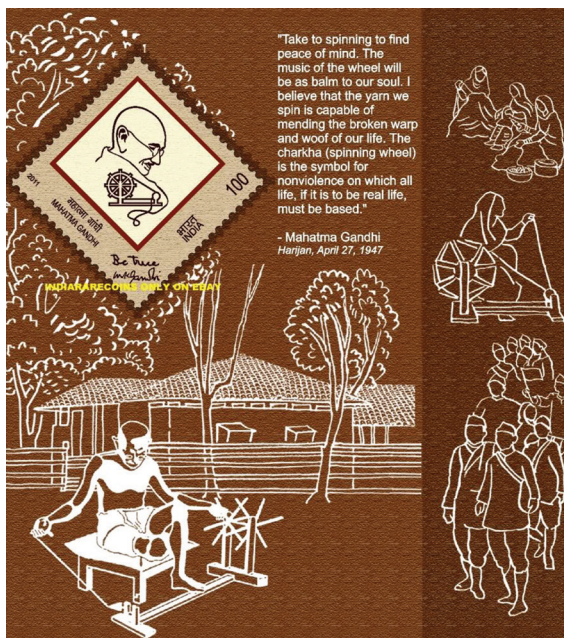
दिनांक 12 फरवरी 2011 को इन्डिपेक्स 2011 के अवसर पर भारतीय डाक विभाग ने महात्मा गांधी जी पर विश्व का सर्व प्रथम खादी से निर्मित डाक-टिकट जारी किया। इस डाक-टिकट का अनावरण भारत की तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल द्वारा किया गया। इह अद्भूत डाक-टिकट का डिज़ाइन श्री शंख सामंत द्वारा किया गया और विशेष रूप से निर्मित खादी सूती कपड़े पर छपाई की गई।

श्री शंख सामंत द्वारा तैयार की गयी चार विभिन्न डिज़ाइन के माध्यम से यह डाक-टिकट महात्मा गाँधी की 50 वीं पूण्यतिथि पर दिनांक 31 जनवरी 1998 के दिन एक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें तत्कालीन राष्ट्रपति श्री आर. के. नारायणन के हाथों से 4 डाक-टिकट की मिनिएचर शीट का विमोचन किया गया। इस डाक-टिकट के माध्यम से गाँधीजी के चार आदर्श कृषक कल्याण, सामाजिक उत्थान, नमक सत्याग्रह एवं सांप्रदायिक सद्भाव को प्रगट करने की कोशिश की गयी है। जैसे की आप देख सकते हैं चारों डाक-टिकट की पृष्टभूमि पर लाल किला अंकित किया गया है, जो स्वतंत्रता का द्योतक है। इस संदर्भ में प्रगट की गई विवरणिका का मुखपाठ “इंडियन स्ट्रगल फॉर इंडिपेनडेंस” महात्मा गाँधी पब्लिकेशन डिवीजन द्वारा लिखा गया है।

यह एक प्रेरणादायक शब्द है "करेंगे या मरेंगे"

दिनांक 2 अगस्त 1992 के दिन भारत छोड़ो आंदोलन की 50वीं वर्षगांठ पर यह दो डाक-टिकट प्रगट की गयी। "करेंगे या मरेंगे" गांधीजी के यह एक प्रेरणादायक शब्द है इस नारा को प्रदर्शित कर श्री शंख सामंत ने डिज़ाइन तैयार की थी। जिसे दो रंगों में स्वदेशी एड़ेसिव डाक-टिकट कागज पर छपवाया गया। यह 0.6 मिलियन प्रत्येक 35 की शिट में छपवाई गई थी।

दिसम्बर 1946 को बंधारण सभा का निर्माण हुआ, जिसमें तमाम शक्तिओं और सत्ता का व्यवस्थापन करना था। डॉ. भीमराव अम्बेडकर जो बंधारण सभा के अध्यक्ष थे। जिस वजह से प्रथम दिवस आवरण पर डॉ. बी. आर. अम्बेडकर की तस्वीर अंकित की गई। भारत गणराज्य की 50वीं वर्षगांठ पर यह डाक-टिकट प्रगट की गयी। श्री रंग द्वारा डिज़ाइन तैयार करके महात्मा गाँधी को श्रद्धांजलि दी गई। दो रंगों में तैयार इस डाक-टिकट को दिनांक 27 जनवरी 2000 को प्रदर्शित किया गया।

"दांडी यात्रा-नमक सत्याग्रह" नामक डाक-टिकट दिनांक 2 अक्तूबर 1980 को दांडी यात्रा की 50वीं वर्षगांठ पर डिज़ाइन कि गई थी। श्री एस. रामचद्रन द्वारा चार रंगों के प्रयोग से यह डाक-टिकट की डिज़ाइन तैयार की गई थी और प्रथम दिवस आवरण की डिज़ाइन श्री चरनजीत लाल द्वारा फोटोग्रेव्योर पद्धति से तैयार की गई थी। गांधीजी की मुखाकृति के साथ-साथ 386 किलोमीटर की दांडी यात्रा के बड़े-बड़े शहरो के नाम से 7 केन्स्लेशन तैयार किये थे।